<u>पाठ-41</u>

परिवर्तन

प्रेरितों के कार्य 9:1-22

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद, यरूशलेम में ईसाई कलीसिया तेजी से विकसित हुआ। परन्तु शुरुआत से ही प्रेरितों को शत्रुता का सामना करना पड़ा। स्तिफनुस, एक व्यक्ति जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, उसे पत्थराव करके मार डाला गया, और "उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ" (प्रेरितों 8:1)। इसके केंद्र में एक फरीसी था जिसका नाम शाऊल था।

परमेश्वर अपने सबसे कटु शत्रुओं को अपने सबसे करीबी मित्रों में बदल सकते हैं। वे सबसे कठोर हृदयों को भी बदलने में सक्षम हैं,और हम इसे इस कहानी में देखते हैं कि कैसे कलीसिया का सबसे बड़ा शत्रु उसका प्रमुख प्रेरित बन गया।

तरसुस के शाऊल ने ईसाइयों को नष्ट करना अपना उद्देश्य बना लिया था,और उसका मानना था कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा था (प्रेरितों 9:1-2)। "परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरितों 9:3-4)

शाऊल ने एक चकाचौंध करने वाली रोशनी देखी, और उसे एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। यह कोई मनोवैज्ञानिक अनुभव नहीं था। जो लोग उसके साथ यात्रा कर रहे थे उन्होंने भी आवाज सुनी। और चकाचौंध कर देने वाली रोशनी कोई मतिभ्रम नहीं थी। इससे उसकी आँख के पिछले भाग का चित्रपट जल गया और वह अंधा हो गया।

आप सोच रहे होंगे, "ऐसा कुछ भी मेरे साथ कभी नहीं हो सकता।" और फिर भी पौलुस कहता है, "मुझ पर इसलिये दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे उनके लिए मैं एक आदर्श बनूँ।" (1 तीमुथियुस 1:16)। दमिश्क की सड़क पर पौलुस का अनुभव किस मायने में हमारे लिए एक उदाहरण, एक आदर्श या एक नमूना हो सकता है?

स्पष्ट रूप से, पौलुस का अर्थ यह नहीं है कि एक मसीही बनने के लिए, आपको एक ऊँची आवाज़ सुननी होगी और स्वर्गीय ज्योति से अंधा होना होगा। परन्तु तरसुस के शाऊल का परिवर्तन इस बात का आदर्श है कि अगर हमें सच्चा ईसाई बनना है तो हमारे जीवन में क्या होना चाहिए।

यीशु मसीह का सच्चा ज्ञान

शाऊल यीशु के बारे में बहुत कुछ जानता था। वह एक प्रतिभाशाली विद्वान था और उसका ध्यान यीशु के अनुयायियों पर था। वह ईसाइयों के दावे को जानता था कि यीशु वादा किया गया मसीहा थे और वे मृतकों में से जी उठे थे।

परन्तु अपने परिवर्तन पर विचार करते हुए, वह कहता है, "मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किये थे।" (1 तीमुथियुस 1:13)। शाऊल जानता था कि ईसाई क्या मानते हैं, और वह जानता था कि ईसाई कैसे रहते हैं। परन्तु वह उस उद्धारकर्ता को नहीं जानता था जिसकी वे आराधना करते थे। परन्तु यह सब तब बदल गया जब शाऊल एक चकाचौंध रोशनी से घिरा हुआ था, और उसने परमेश्वर के पुत्र को उसका नाम लेते हुए सुना: "शाऊल, शाऊल…" (प्रेरितों 9:4)।

आप कह सकते हैं, "यह सब मुझे बहुत दूर की बात लगती है। मुझे दमिश्क रास्ते का अनुभव कभी नहीं हुआ। परन्तु एक दिन आप यीशु मसीह को उतनी ही निश्चितता से देखेंगे जितनी निश्चितता से शाऊल ने देखी थी। उसके साथ जो हुआ, वही आप के साथ होगा। आप उनकी आवाज सुनेंगे, और वे आपको नाम से बुलाएँगे।

आप बहस करने के लिए ईसाई धर्म को विश्वासों के एक समूह के रूप में सोच सकते हैं या उसे एक जीवन शैली के रूप में ध्यान में रख सकते हैं। परन्तु पौलुस कहते हैं, "यह वह चीज़ है जिससे मैं चूक गया!" हम यहाँ एक व्यक्ति की बात कर रहे हैं, न कि कोई भी व्यक्ति की बात - एक अद्वितीय और महिमामयी व्यक्ति, प्रभुता सम्पन्न प्रभु यीशु मसीह जो प्रत्येक जीवन का दावा करते हैं। वह कौन है यह देखने से सब कुछ बदल जाता है।

स्वयं का सच्चा ज्ञान

तब शाऊल ने कहा, हे प्रभु, तू कौन है? उत्तर था: "मैं यीशु हूँ" (प्रेरितों 9:5)। शाऊल ने सोचा कि वह एक व्यवस्था, एक विश्वास, एक धार्मिक आंदोलन से लड़ रहा था, परन्तु वह भयभीत हो गया, कि उसने खुद को परमेश्वर के पुत्र के खिलाफ खड़ा कर दिया था।

"मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है" (9:5)। शाऊल ईसाइयों को सता रहा था, परन्तु यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे क्यों सताता है?" (9:4; 26:14)। हमारे द्वारा किया गया प्रत्येक पाप यीशु मसीह के विरुद्ध एक व्यक्तिगत अपराध है। जब हम दूसरों को घायल करते हैं, तो हम यीशु को घायल करते हैं। जब हम दूसरों को दुःखी करते हैं, तो हम यीशु को दुःखी करते हैं। यदि हम दूसरों को गाली देते हैं, तो हम यीशु को गाली देते हैं।

अचानक शाऊल का अपने बारे में बिल्कुल अलग दृष्टिकोण हो गया। उसने सोचा कि वह स्वर्ग की राह पर है, परन्तु उसे पता चला कि वह तो नरक की राह पर है। उसने ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान प्रभु के विरुद्ध पाप किया था और, वह एक धर्मी व्यक्ति होने से बहुत दूर था जिसे परमेश्वर द्वारा भरपूर पुरस्कार दिया जाएगा, उसने पाया कि वह एक पापी था जो केवल परमेश्वर की दया पर ही निर्भर था।

शाऊल वर्षों से अपने आप से कहता आ रहा था कि वह एक अच्छा व्यक्ति है। उसने खुद को "निर्दोष" माना था (फिलिप्पियों 3:6), परन्तु जब उसने खुद को देखा जैसा वह वास्तव में था - एक कड़वा, क्रोधित व्यक्ति, दूसरों के प्रति और परमेश्वर के प्रति नाराजगी से भरा हुआ - तो उसने बदलना शुरू कर दिया।

जब आप यीशु मसीह को जानेंगे, तो आपको अपने बारे में एक नई समझ आएगी। अहंकार खत्म हो जाएगा और आप में एक नई विनम्रता आ जाएगी।

जब आप नहीं जानते कि कैसे रुकें

प्रभु यीशु मसीह के प्रति समर्पित होने से आपको अत्यधिक राहत मिलेगी। मसीह ने शाऊल से कहा, "पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है" (प्रेरितों 26:14)। पैने चरवाहों द्वारा जिद्दी जानवरों को उकसाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली धारदार छड़ियाँ थीं।

भाले की तरह कीलों वाली सरिया की एक कतार की कल्पना करें, जो जमीन से लगभग दो फीट ऊपर लेटा हो। एक आदमी आपके पास आता है। वह क्रोधित है, और वह जितनी ताकत जुटा सकता है, उससे वह कीलों पर लात मारता है। उसके जूते के अंगूठे से एक कील आर-पार हो जाती है और आदमी दर्द से कराह उठता है।

परन्तु उसका दर्द उसे और भी अधिक क्रोधित कर देता है, इसलिए वह फिर से भड़क उठता है। इस बार कील उसके जूते में गहराई तक धंस जाती हैं और अब उसके पैर से खून आसानी से बहने लगता है। परन्तु वह आदमी रुक नहीं सकता है, और आप घबरा जाते हैं जब वह आगे बढ़ता है और बार-बार लात मारता है जब तक कि उसका पैर लुगदी में तब्दील न हो जाए।

"शाऊल, शाऊल...पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है"। जब आप कीलों पर लात मारते हैं तो आप उन्हें चोट नहीं पहुँचाते हैं, बल्कि आप सिर्फ खुद को घायल करते हैं। और जितना अधिक आप ऐसा करते हैं, यह उतना ही बदतर होता जाता है।

क्या आप जो कर रहे हैं यह उसकी तस्वीर है? समय-समय पर उस चीज को दोहराते रहना जिसने पहले भी आपको कष्ट पहुँचाया है? किसी आंतरिक मजबूरी से प्रेरित होकर, आप वही करते रहते हैं जो आपको दुख पहुँचाता है और आप नहीं जानते कि इसे कैसे रोका जाए।

रुकने का केवल एक ही तरीका है, और वह है स्वयं को पूरी तरह से प्रभु यीशु मसीह के अधीन कर देना: "हे प्रभु, मैं क्या करूँ?" (प्रेरितों 22:10) जब आप अपने आप को यीशु के अधीन करते हैं, तो आप बहुत राहत का अनुभव करेंगे।

शाऊल ने कहा, "मुझ पर दया हुई..." (1 तीमुथियुस 1:13)। यीशु के हाथों और पैरों में कीलें ठोक दी गईं ताकि आप दया प्राप्त कर सकें और कीलों पर लात मारना आपके लिए अंत न हो।

परमेश्वर लोगों के द्वारा कार्य करते हैं

शाऊल अंधा था और धूल में पड़ा हुआ था, परन्तु यीशु ने उससे कहा, " अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा।" (प्रेरितों 9:6)।

जब यीशु आपको दिखाते हैं कि आप पापी हैं और आपकी एकमात्र आशा उनकी दया पर स्वयं को छोड़ देना है, तो उनका उद्देश्य आपको धूल में लोटते हुए छोड़ना नहीं है। वे आपको ऊपर उठाएंगे और दुनिया में अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए भेजेंगे।

शाऊल दमिश्क में गया, और तीन दिन तक प्रार्थना और उपवास करता रहा (प्रेरितों 9:9, 11):*प्रभु, मुझ पर दया करो। प्रभु, मुझे दिखाएँ कि आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं।* शाऊल की प्रार्थना का उत्तर हनन्याह नामक एक व्यक्ति के माध्यम से आया।

पुनर्जीवित प्रभु के साथ सीधे साक्षात्कार के माध्यम से शाऊल को मसीह के बारे में पता चला। परमेश्वर ने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से इस व्यक्ति के हृदय के अभिमान और पूर्वाग्रह को तोड़ दिया। किसी ने भी उसके साथ सुसमाचार साझा नहीं किया। उसके धर्म परिवर्तन में कोई और शामिल नहीं था।

परन्तु जब शाऊल ने पूछा, "हे प्रभु, मैं क्या करूं?" प्रभु ने कहा, "उठो और शहर में प्रवेश करो और तुम्हें बताया जाएगा कि तुम्हें क्या करना है।" यह ऐसा है मानो परमेश्वर उससे कह रहे हैं: "तुम्हारे जीवन में मेरे प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से तुम्हें यह एहसास हो गया है कि मैं कौन हूं, परन्तु सामान्य रूप से ऐसा नहीं होता।" परमेश्वर साधन का प्रयोग करते हैं। उनका सामान्य तरीका अपने लोगों के माध्यम से कार्य करना है।

"दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था" (9:10)। यहोवा ने दर्शन में उससे बात की और उसे उस घर में जाने को कहा जहाँ शाऊल प्रार्थना कर रहा था। हनन्याह जाना नहीं चाहता था, और आप शायद ही उसे दोष दे सकते हैं। परमेश्वर उसे उस आदमी के लिए प्रार्थना करने के लिए बुला रहे थे जिसने उसे तीन दिन पहले ख़ुशी से मार डाला होता। "हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयाँ की हैं" (9:13)। परन्तु प्रभु ने हनन्याह से कहा, "जाओ..." (9:15)। और परमेश्वर का शुक्र है कि उसने ऐसा किया!

एक नए विश्वासी की मदद करना

शाऊल अंधा था, और तीन दिन तक वह घोर अन्धकार में बैठा रहा। ईसाइयों के खिलाफ उसका पूरा अभियान इस दृढ़ विश्वास पर आधारित था कि परमेश्वर प्रतिशोध का परमेश्वर है, और अब वह जान गया था कि वह परमेश्वर के प्रतिशोध के योग्य है।

शाऊल यीशु के शिष्यों को मारता रहा है, और अब यीशु का एक शिष्य आया और उसने उस अंधे आदमी के सिर पर हाथ रखा। यह एक भयानक क्षण रहा होगा-*वह मेरे साथ क्या करेगा?* परन्तु शाऊल ने जो पहले शब्द सुने वे थे: "भाई शाऊल..." (9:17)। शाऊल, मेरे भाई! हनन्याह ने शाऊल को प्रेम, क्षमा और अनुग्रह से घेर लिया।

जब कोई व्यक्ति यीशु पर विश्वास करता है, तो हमारी पहली जिम्मेदारी यह है कि हम उसे प्यार से घेरे। और फिर हमें उन्हें सुसमाचार में स्थापित करने में मदद करनी चाहिए। हनन्याह ने शाऊल के लिये यही किया।

शाऊल का अंधापन परमेश्वर के न्याय का एक संकेत था, और जब हनन्याह ने उसकी दृष्टि वापस लाने के लिए प्रार्थना की, तो यह शाऊल के लिए एक संकेत था कि परमेश्वर का न्याय हटा लिया गया था। यह एक आश्वासन था कि मसीह ने उस पर दया की थी, और उसे परमेश्वर के साथ एक बिल्कुल नए रिश्ते में लाया गया था।

हनन्याह ने शाऊल को सेवकाई के लिए नियुक्त किया, जिसे हम प्रेरित पौलुस के नाम से अधिक जानते हैं। "वह तो अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है" (9:15)।

जब लोग परिवर्तित हो जाते हैं, तो हमें उन्हें मसीह में भाइयों या बहनों के रूप में गले लगाना है। हमें उन्हें सुसमाचार में स्थापित करना है, और हमें उन्हें उस कार्य को खोजने में मदद करनी है जो परमेश्वर को उनसे करवाना है। मसीह इस सेवकाई का उपयोग बाहरी लोगों को अंदरूनी में बदलने और दुश्मनों को दोस्तों में बदलने के लिए करते हैं।

जब शाऊल को मसीह की आवश्यकता के बारे में पता चला, तो वह जिस पहले ईसाई से मिला, उसने उससे प्यार किया, उसे माफ किया, उसके लिए प्रार्थना की, उसे बपतिस्मा दिया, उसे खाना खिलाया, उसका मार्गदर्शन किया और उसे तैयार किया। परमेश्वर लोगों के माध्यम से कार्य करते हैं: पौलुस ने प्रार्थना की, और उत्तर हनन्याह के माध्यम से आया।

परमेश्वर का लोगों के माध्यम से काम करने का सिद्धांत सेवकाई और कलीसिया के विशेष कार्य का आधार है। परमेश्वर किसी अन्य व्यक्ति को शामिल किए बिना मानव जीवन को बदल सकते हैं, परन्तु वे अपने लोगों के माध्यम से काम करना चुनते हैं। "हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं" (1 कुरिन्थियों 3:9)।

यीशु मसीह किसी भी व्यक्ति के जीवन को बदलने में सक्षम हैं, यहाँ तक कि उस व्यक्ति का भी जो खुले तौर पर उनके प्रति शत्रुतापूर्ण रहा हो। यह परिवर्तन परमेश्वर का कार्य है जो रूपांतरण से शुरू होता है, जिसमें हम दया की अपनी आवश्यकता का पता लगाते हैं और खुद को मसीह के प्रति समर्पित कर देते हैं। जब आप परिवर्तित हो जाते हैं, तो परमेश्वर के पास आपके लिए कार्य होता है। और जैसे ही आप अपने आप को एक स्थानीय गिरजाघर के प्रति समर्पित करते हैं, अन्य विश्वासी आपको उस कार्य को खोजने में मदद करेंगे।

प्रशन

परमेश्वर के वचन के साथ आगे जुड़ने के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें। उन पर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चर्चा करें या उन्हें व्यक्तिगत प्रतिबिंब प्रश्नों के रूप में उपयोग करें।

1. दमिश्क की सड़क पर पौलुस का अनुभव किस मायने में हमारे लिए एक उदाहरण, एक आदर्श या एक नमूना हो सकता है? क्या उसके साथ जो हुआ वही हमारे साथ भी होना चाहिए?

2. क्या आपके जीवन में कोई ऐसा समय आया जब आपको लगा कि आप ईसाई धर्म को समझते हैं, परन्तु आपने नहीं समझा? क्या छूट गया था?

3. इस कथन का उत्तर दें: "जब आप यीशु मसीह को जान लेंगे, तो आपको अपने बारे में एक नई समझ आ जाएगी।"

4. आपके जीवन में किसे प्रेम से घेरने, सुसमाचार का स्पष्ट ज्ञान लाने, या सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है?

5. आप परमेश्वर के उस वचन पर क्या प्रतिक्रिया देते हैं जो कहता है, "हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं" (1 कुरिन्थियों 3:9)?